International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 01-05

धरती का कवि त्रिलोचन

मंजू देवी
शोध छात्रा हिन्दी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

सारांश

प्रगतिवादी कवि त्रिलोचन ने काव्य को जीवन की वास्तविकता से जोड़कर कविता को सर्वग्राह्य एवं व्यापक बनाने में अतुलनीय योग दिया है। उनका काव्य सैद्धांतिकता से दूर मानवीय जीवन की वास्तविक अनुभूतियों का चित्रण करता है। ये अनुभव कवि ने यथार्थ के ताप से तपकर निर्मित किये हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक यथार्थ, युगानुभूति, मानवीय संवेदना, वर्ग चेतना तथा वर्ग क्रांति के स्वर आदि प्रगतिशील तत्वों के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। उनके यहाँ प्रेम की भावना से लेकर प्रकृति सौन्दर्य तक सभी श्रम का पर्याय बन कर उपस्थित हुए हैं। उनकी कविता सर्वहारा वर्ग की आशाओं आकांक्षाओं को चित्रित कर उन्हें नई दिशा प्रदान करती है। उनकी कविताएँ जन सामान्य में ऊर्जा का विस्तार कर नव्य समाज एवं संस्कृति निर्माण के लिए प्रोत्साहित करती है। त्रिलोचन की सृजनात्मक दृष्टि में धरती अपने अनेक रूप रंगों के साथ सदैव उपस्थित रही है। धरती और श्रमजीवियों से वास्तविक प्रेम करने वाले त्रिलोचन को 'धरती का कवि' कहा गया है।

मूल शब्द: मानवतावाद, धरती, अट्टहास, पाखण्डियो, नारेबाजी, विषमताएँ, वेदनानुभूति, गतिशीलता, अवरोध, चट्टानों, काल्पनिक, प्रवाहित, अंधविश्वासों, परम्पराओं, सम्मानपूर्ण, कार्यशीला, यथास्थितिवादी, लेशमात्र, कृत्रिमता, प्रतिबिम्बित, पोषक, सॉनेट, विषंगतियों, क्षतिपूर्ति।

प्रस्तावना

त्रिलोचन अपनी धरती और मिट्टी से उपजे किसानों की पीड़ा के कवि हैं और लोक से उनका गहरा जुड़ाव है। उनकी कविता में जनपद की माटी की सोंधी महक, लोक तत्व और ग्राम्य जीवन सहज रूप में अभिव्यक्त हुआ है। वे किसान-जीवन के सुत्र-दु:ख आशा-निराशा और संघर्ष की कविता लिखते हैं। उनका किसानी चित्रण यथार्थ और अनुभव की डोर से बंध कर अभिव्यक्त हुआ है, भावुकता या विचारधारा के आग्रह से ढक कर नहीं। प्रगतिवादी कवियों में त्रिलोचन एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने धरती से जुड़कर धरती के प्राणी की बात की है।

त्रिलोचन की कविता ग्रामीण कारीगर, खेत-मजदूर और किसान, स्त्रियों के उद्धार और चेतना की बात करती है। वह अपनी मिट्टी की परम्परा से कुछ लेती है, वहीं सामाजिक रूढ़ियों, पपरम्पराओं पर तीखा प्रहार भी करती है। कवि की संवेदना 'नगई महरा', भोरई तथा चम्पा जैसे यथास्थितिवादी पात्रों के आत्मबोध को प्रस्तुत करती है। त्रिलोचन की कविता के सम्बन्ध में मुक्तिबोध लिखते हैं- ''उसमें चीख-पुकार या अट्टहास का आलोड़न नहीं है... कवि की प्रगतिशीलता अट्टहासपूर्ण आन्तरिक क्षतिपूर्ति के रूप में नहीं आई है, वरन् कवि के अपने जीवन संघर्ष से मँज-घिसकर तैयार हुई है।''[1] कवि की सामाजिक पैठ और अनुभव दोनों अत्यधिक सूक्ष्म और व्यापक हैं। लोनी लगी दीवार की जर्जर अवस्था के माध्यम से कवि ने भारतीय समाज, किसान, मजदूर एवं सर्वहारा वर्ग की जर्जरता का अत्यन्त सजीव चित्रण किया है-

लोनी लग के कट चली दीवार
सूरत आई है घर के खोने की।[2]

त्रिलोचन का मानना है कि प्राचीन मान्यताएँ और विश्वास जर्जर एवं रूढ़िग्रस्त है। वे समाज के विकास को अवरूद्ध कर रहे हैं। अत: नवीन संस्कृति एवं समाज के निर्माण हेतु उन्हें तोड़ना आवश्यक हो गया है क्योंकि जब तक इन रूढ़िवादी मान्यताओं का महल टूटेगा नहीं तब तक विनाश के बादल छाये रहेंगे। अत: नवीन समाज और संस्कृति के माध्यम से ही सर्वसुलभ समाज की कल्पना की जा सकती है। परिवर्तन का आकांक्षी कवि नवीन समाज के निर्माण का आह्वान करता हुआ कहता है-

कर नूतन निर्माण दिखा कुछ
तू अपने पौरूष का करतब
पराधीनता विविध तोड़कर दिखा
नई गति का उपक्रम अब
बहुत पुरातन की छायायें
मानवता ने दुख पाया है
बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्यतरू बढ़ पाया है।[3]

त्रिलोचन एक ऐसे प्रगतिशील समाज और संस्कृति के आकांक्षी हैं जिसमें सभी वर्गों का समान रूप से विकास हो। पूंजीवादी संस्कृति ने मानव और समाज को अस्त-व्यस्त कर दिया है। जाति धर्म के पाखण्डियों ने अपने नियम-कानून रूपी दुर्गों का निर्माण कर जनता को सदैव ठगा और शोषण किया है। कवि उन दुर्गों को ध्वस्त कर नई संस्कृति की कल्पना करता है-?

करता हूँ आक्रमण धर्म के दृढ़ दुर्गों पर
कवि हूँ नया मनुष्य मुझे यदि अपनायेगा
उन गानों में अपने विजयगान पायेगा।[4]

कवि को विश्वास है कि परिवर्तन का आकांक्षी नया समाज उसे अवश्य ही अपनायेगा।

वैश्वीकरण और भौतिकतवाद ने बुर्जुआ वर्ग के जीवन को तो सरल और सुविधायुक्त बनाया है किन्तु सर्वहारा एवं निम्नवर्ग की जीवन समस्याओं और संघर्षों को बढ़ाया है। पूंजीवाद के कारण अमीर और गरीब के बीच की खाई और गहरी हुई है। पूंजीवाद के पोषक तत्वों का विरोध करते हुए कवि कहता है- ''आओ, अलगाने वाले अवरोध निवारें।''[5] कवि का मानना है कि समाज में बेपढ़े-लिखे और निरक्षर लोगों ने जिन रूढ़िवादी परम्पराओं और अंधविश्वासों को अपने बीच पनपने दिया है। उन्होंने उनकी जीवन शैली को अत्यन्त दुरुह बना दिया है। कवि अपनी कविता के माध्यम से उन विकृत सामाजिक परिस्थितियों से जनता को जागरूक करने का सार्थक प्रयास करता है-

ये नये युग से अपरिचित और सशंकित
ये गये सब दिन सताये
चल रहे प्राचीनता से लौ लगाये
एक अपनी ही नई दुनिया बसाये
आज भी इनको पुरानी बात पहले रूप में ही
भा रही है भा रही है भा रही है।[6]

नवीन ज्ञान और संस्कृति से अपरिचित ये जन प्राचीनता को ही अपनी विरासत मान बैठे हैं। कवि रूढ़ियों और परम्पराओं में जकड़ी पुरातन समाज व्यवस्था को ध्वस्त कर, नये समाज के ज्ञान और समृद्धि की कल्पना करता है। कवि मानव को पुरातनता का मोह त्याग कर नवीन संस्कृति को अपनाने तथा सम्मानपूर्ण जीवन जीने का समर्थन करता है-

बीज क्रांति का वोता हूँ मैं, अक्षर दाने
हैं, घर बाहर जन समाज को नये सिरे से
सच देने की रूचि देता हूँ। घिरे-घिरे से
रहना असम्मान है जीवन का अनजाने।[7]

कवि का मानना है कि व्यक्ति को बाधाओं से घबराकर लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए बल्कि उनका डटकर सामना करते हुए निरन्तर सत्य के मार्ग पर गतिशील रहना चाहिए-

चलना है
चलता हूँ
दिन हो या रात हो
बाधाएँ
आएँ
अच्छा तो है साथ हो।[8]

त्रिलोचन, प्रेमचन्द और निराला की परम्परा के कवि हैं। उन्होंने अपनी कविता का विषय जनसामान्य, मजदूर ओर किसान को बनाया है। उनकी चेतना का मूल ग्रामीण परिवेश और जन संस्कृति है। प्रेमचन्द, निराला और केदारनाथ के समान त्रिलोचन की कविताओं में भी प्रेम का मांसल या वासनाजन्य रूप नहीं बल्कि श्रम का पर्याय बनकर आया है। कवि की सौन्दर्य दृष्टि अत्यन्त व्यापक और प्रौढ़ है। उसके सौन्दर्य के लोक में किसान, मजदूर तथा निम्वर्ग की कार्यशीला नारी है। 'धरती' कविता संग्रह में कवि लिखता है-

मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी।[9]

त्रिलोचन को 'धरती का कवि' कहा गया है। अत: उनकी कविता में वहाँ का परिवेश तथा प्रकृति सहज ही आ गये हैं। उन्होंने प्रकृति का बड़ा मार्मिक और स्वाभाविक चित्रण किया है। उनके काव्य में प्रकृति का सौन्दर्य श्रम के साथ मिलकर आया है। मुक्तिबोध इस सम्बन्ध लिखते हैं- ''प्रकृति उनके मन में वाह्य वास्तविकता के रूप में है, मन की इमेज के रूप में नहीं। वह उस वास्तविकता के चित्रात्मक रूप पर मुग्ध है, परन्तु उसका अन्तर्मुख चित्रात्मक अंकन नहीं करता, उसे देखकर अपने मन में उमड़े भावों को प्रधानता देता है।''[10]

त्रिलोचन लोक जीवन के गहरे जानकार हैं। उन्होंने भारतीय ग्रामीण किसान एवं मजदूर के मनोविज्ञान तथा मन:स्थिति का अत्यन्त स्वाभाविक एवं पारदर्शी चित्रण किया है। सच्चे अर्थों में वे ग्रामीण अंचल एवं लोक जीवन के आधुनिक कवि हैं। लोक में गहरी पैठ होने के कारण ही उन्हें 'जनकवि' कहा गया है। मलयज त्रिलोचन को लोक जीवन का कवि मानते हैं। वे लिखते हैं- ''हिन्दी में शायद त्रिलोचन ही ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपने को लोक जीवन से पूरी तरह जोड़ लिया है, सौन्दर्य की अन्तत: गरिमा के साथ, सृजन के आह्लादकारी अनुभव के साथ, रचना की एक बराबर की साझेदारी के साथ, त्रिलोचन के लिए रचना किसी तनाव से मुक्त होने में नहीं, बल्कि जीवन का कुछ खोजने, पाने और फिर उसे बाँट देने में होती है। इसलिए उनकी रचना प्रक्रिया का कोई रहस्मय पक्ष नहीं है। कला त्रिलोचन के लिए एक ऐसा आइना है जिसमें वे अपनी और दूसरों की अनुभूतियों के मर्म को सजीव थिरकते हुए रूपों में दिखा सकें। और इसमें उनकी कलाकारिता बस इतनी है कि वे इस आइने पर जरा-सी-धूल-धब्बा न पड़ा रहने दें, उसे झकाझक साफ पारदर्शी रखें।''[11]

किसानी जीवन संघर्ष प्रगतिवादी बुद्धिजीवियों के लिए एक 'फैशन' हो गया है किन्तु त्रिलोचन का काव्य उनकी प्रगतिशील संवेदना का प्राणतत्व है। त्रिलोचन ने संघर्ष को अपनी यात्रा का अभिन्न अंग एवं किसान जीवन का यथार्थ चित्रण ही उनकी सृजनात्मकता का अक्षय स्रोत रही है। मैनेजर पाण्डेय जी लिखते हैं- ''दूसरों के लिए 'संघर्ष' विशेषण है, लेकिन त्रिलोचन के लिए वह संज्ञा है। सुविधा जीवी कवियों के लिए शब्द अघाये आदमी की डकार होते हैं, लेकिन त्रिलोचन की कविता में शब्द आँखों से टपकने वाले लहू की बूँदें है।''[12] कवि की संवेदना भाषा-शैली सभी में संघर्षशीलता दिखाई पड़ती है।

त्रिलोचन समाज और उसकी चेतना के कवि हैं। अत: समाज को महत्व देना स्वाभाविक ही है। उन्होंने अपने संग्रह 'धरती' में अकेलेपन की यंत्रणा को अभिव्यक्त किया है। वे एकाकी रहकर समाज की समस्याओं, विसंगतियों का मुकाबला करने में विश्वास नहीं करते। उनका मानना है कि जब तक समाज साथ नहीं होगा हम संघर्षशील व्यक्तियों की पीड़ा को दूर नहीं कर सकते-

आज मैं अकेला हूँ
अकेले रहा नहीं जाता
सुख दु:ख एक भी
अकेले सहा नहीं जाता।[13]

कवि को विश्वास है जिस दिन समस्त जनता एक हो जायेगी और सर्वहारा वर्ग को पूँजीपति शोषकों की नीति का पता चलेगा, उस दिन क्रांति की एक लहर आयेगी। किसान, मजदूर और निम्नवर्ग का शोषण करने वाले पूंजीपति शोसकों (कीड़ो) को अपना आहार बना डालेंगे-

कठफोड़े ने मार-मार कर उन कीड़ों को
बाहर आज निकाल लिया आहार के लिए
जो तरू के अन्तस्थ शत्रु थे।[14]

आज के औद्योगिक युग में पूंजीवादी और बढ़ती भौतिकतावादी प्रवृत्ति ने मानवीय संवेदनाओं को तार-तार कर दिया है। मानवीय धरातल पर खड़े होकर कवि ने मानव की मूलभूत समस्या रोटी और भूख की पीड़ा को व्यक्त किया है। इसके लिए वह भारतीय समाज व्यवस्था और मानवीय संवेदनाओं का हनन करने वाले सौदागरों को दोषी मानता है। कवि की रोजी-रोटी के सवाल से जुड़ी तथा उसकी सुलझी मानसिक दृष्टि मानव के समस्त दु:खों को अपना बना लेना चाहती है-

दु:ख से दबे हुए मानव
आ आ मैं ले लूँ
तेरा सब दु:ख।[15]

जीवन की कठोर तथा संघर्षमय स्थितियों से जूझने वाले त्रिलोचन ने अपनी कविताओं में अपने दर्द को उड़ेला है। कवि का जीवन संघर्ष तथा काव्य में अभिव्यक्त संघर्ष दोनों समाज की व्यवस्था और स्थिति को व्यक्त करते हैं। उनके काव्य संग्रह- 'धरती', 'मैं उस जनपद का कवि हूँ तथा 'ताप के ताए हुए दिन' में जीवन-संघर्ष का यथार्थ तथा मार्मिक चित्रण हुआ है। कवि 'दिगन्त' कविता में लिखता है-

मित्रों मैंने साथ तुम्हारा जब छोड़ा था
तब मैं हारा थका नहीं था, लेकिन
मेरा तन भूखा था, मन भूखा था तुमने टेरा
उत्तर मैंने दिया नहीं तुमको, घोड़ा था
तेज तुम्हारा, तुम्हें ले उड़ा! मैं पैदल था।[16]

भूख और रोटी की मूलभूत पीड़ा त्रिलोचन को तुलसी से जोड़ती है। दोनों कवियों की संवेदना का केन्द्र जमीन से जुड़ा वह क्षुद्र प्राणी है जिसके पास न पेट भरने को रोटी है और न ही तन ढकने के लिए कपड़ा।

त्रिलोचन की कविताएँ एक संघर्षरत कवि के अनुभव के ताप से ताई हुई कविताएँ हैं। वे मानव के जीवन संघर्ष का यथार्थवादी, सजीव चित्रण करती हैं। कवि समाज में जो घटित होता देखता, जो अनुभव करता है, अपनी कविताओं में अभिव्यक्त करता है-

मैं उस जनपद का कवि हूँ, जो भूखा दूखा है,
नंगा है अनजान है, कला नहीं जानता।[17]

कुछ प्रगतिवादी कवियों ने गरीबों और शोषितों के लिए काफी शोर-शराबा किया, किन्तु अनुभव और सत्यता से दूर खोखली नारेबाजी गरीबों के कुछ काम न आई। भूखे-नंगे मानव की समस्या लम्बे-चौड़े भाषणों या सुन्दर शब्दों के जाल से नहीं सुलझती बल्कि यथार्थ की भूमि पर उतर कर कुछ करने से समस्याओं का अन्त होगा। गरीबों की बनावटी हिमायत करने वालों का कवि विरोध करता हुआ कहता है-

कोई भूखा हो तो उसको लाकर रोटी दो
मत लम्बी चौड़ी बात बनाओ इसकी उसकी।[18]

किसी भी देश की स्थिति को प्रतिबिम्बित करने में वहाँ की समाज व्यवस्था महत्वपूर्ण होती है। जाति, धर्म, लिंग भेद, ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी आदि विषमताएँ समाज के विकास में बाधा पहुँचाती हैं। कवि इन विषमताओं को दूर कर एक स्वस्थ समाज की कल्पना करता है। कवि का हृदय इन विषमताओं से क्षुब्ध हो उठा है। वह सम्पूर्ण समाज का आह्वान करता हुआ कहता है

अहंकार जो थोथा
है वह मुझको सह्य नहीं है, मानव असली
मुझको प्रिय है- खड़ा खेत में है जो थोथा
मैं उसको उखाड़ डालूँगा-ज्वर है फसली
विषम समाज व्यवस्था सम जब खिलायेगा
तभी, तभी सन्तोष इस हृदय में आयेगा।[19]

विषम समाज व्यवस्था समाज के लिए ज्वर होती है, वह उसे भीतर से खोखला बना देती है। अत: कवि का चिन्तित होना स्वाभाविक है।

कवि और उसकी कविता समाज तथा सर्वहारा वर्ग के उत्थान और विकास की बात न करें तो उसकी प्रगतिशीलता पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है, किन्तु त्रिलोचन ने मानो समाज और प्राणी मात्र के जीवन उत्थान के लिए सर्वस्व समर्पित कर दिया है। वे वर्षों से मानवता का राग अलापने वालों की कटु आलोचना करते हैं। उनको 'कथनी तजि करनी' के लिए प्रेरित करता हुआ कवि कहता है-

मानवता की बातें करते हो
कितना उत्साह दिखा जाते हो
उनको अब पहचानो
मानव जानो, मानो।[20]

जो किसान, मजदूर विषम परिस्थितियों में भी अपना तन खट कर, गला कर दूसरों का भला करते हैं, किन्तु वे सदैव खुद अभाव में ही जीवन व्यतीत करते हैं। इसका कारण समाज व्यवस्था और सत्ता के पोषक लोग हैं। जिन्होंने निम्नवर्ग की जनता को ऐसा जीवन जीने को विवश किया है। कवि की संवेदना ऐसे किसान, मजदूरों की दयनीय दशा को देखकर अनुभूति के धरातल पर अभिव्यक्त हुई है–

तन का खटना, खट कर लटना, पोश न माना
दिग दिगन्त व्यापी पथ को भी कोश न माना
पैरों ने फिर भी हाथों को काम नहीं है
हाट पहुँच तो गये टेन्ट में दाम नहीं है।[21]

कवि को विश्वास है कि श्रमिकों एवं मजदूरों के दिन भी पलटेंगे, उनकी समृद्धि के दिन भी आयेंगे। क्योंकि सतत् गतिशीलता चेतना की प्रतीक होती है और ठहराव उसकी मृत्यु। अतः जीवन की समस्याओं और अवरोधों को दूर करते हुए सत्य के मार्ग पर निरन्तर गतिशील रहना ही प्रगतिशील चेतना का प्रतीक है। कवि की गतिशील चेतना सरिता की अविरल धारा के समान जीवन प्रवाह को प्रेरित करती है–

सरित की संगीतमयी गति
नहीं जानती जीवन में यति
गति जीवन है यति उसकी क्षति

यति पर रुक कर फिर गति को पथ पर ढलना है।[22]

कवि की चेतना में भी ठहराव नहीं है वह पत्थरों और चट्टानों के थपेडों को झेलते हुए भी सतत् प्रवहमान है। जलधारा के समान कवि का जीवन भी पत्थरों और चट्टानों को तोड़ते हुए आगे बढ़ता है। इन समस्याओं और संघर्षों से लगातार जूझने के बाद भी कवि न ही थका है और न ही टूटा है बल्कि वह और अधिक मजबूत बना है–

आभारी हूँ मैं पथ के सब आघातों का
मिट्टी जिनसे वज्र हुई उन उत्पातों का।[23]

प्रगतिशील चेतना से युक्त कवि नये समाज और संस्कृति के निर्माण की बात करता है। स्वार्थी प्रवृत्ति को त्यागकर वैश्विक कल्याण की बात करता है। वह समस्त जगत के कल्याण के लिए मानव का सम्बोधन करता हुआ कहता है–

हम तुम इसी जगत के प्राणी
इसी जगत ने दी है वाणी
इसको नवनिर्मित करने में
हो हम तुम सक्रिय कल्याणी।[24]

त्रिलोचन की कविता के पात्र भी काल्पनिक नहीं बल्कि वास्तविक जीवन, जगत से लिए गये हैं। नगई महरा, भोरई केवट आदि नाम ऐसे ही हैं। ग्रामीण परिवेश के वास्तविक पात्रों के माध्यम से कवि ने उनके जीवन संघर्षों एवं परिस्थितियों का यथार्थवादी चित्र अंकित किया है। कवि का अनुभव क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत और प्रभावशाली है। वह सदैव आशावान और तटस्थ होकर आगे बढ़ा है–

दुनिया की नदी को माँझता हूँ
हर घाट को जाकर देखा है,
मन अब भी आशा थामे है
क्या जाने उतारा पा जाये।[25]

उनकी कविता के लोक में किसान, मजदूर ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे बच्चे भी पात्र बनकर आये हैं। ये बच्चे कवि की ममतामयी दृष्टि को व्यक्त करते हैं। उनकी कविता में ये नन्हें बच्चे बचपन के साथ-साथ भविष्य का प्रतीक बनकर आये हैं। 'नन्हें' कविता में कवि लिखता है–

नन्हें ने सिर पर हवाई जहाज देखा
तो हठ पकड़ा
पापा पापा
हवाई जहाज मुझे भी ला दो
मैं भी उड़ाऊँगा
नन्हें उतरा, दौड़ा मम्मी के पास गया
और देखने लगा, मम्मी ने पूछ लिया
नन्हें यह किसकी
नन्हें ने कहा, मेरी है, छोड़ों तुम
अब मैं दौड़ाऊँगा।[26]

त्रिलोचन ने अपने काव्य में पाश्चात्य लिरिक के एक रूप सॉनेट का प्रयोग भी किया है। सानेट लिखने में त्रिलोचन ने परम्परा के अनुकरण के साथ ही प्रयोग की नवीनता का स्पर्श देकर उन्हें जीवनी शक्ति प्रदान की है। यद्यपि रामविलास शर्मा भी सॉनेट लिखते हैं किन्तु उनमें त्रिलोचन जैसी स्वच्छता एवं कसावट का अभाव है। सॉनेट और त्रिलोचन हिन्दी में एक दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। डॉ. कौंतिकुमार लिखते हैं- ''जिस प्रकार तुलसीदास को हम उनकी चौपाईयों से जानते हैं, बिहारी को उनके दोहों में अथवा मैथिलीशरण गुप्त को उनकी हरिगीतिका से वैसे ही त्रिलोचन को उनके सॉनेटों से पहचाना जा सकता है।''[27]

सॉनेटों में त्रिलोचन के भाव कसे-कसाये, अनूठे और प्रभावशाली होते हैं। इन छन्दों में कवि की द्वन्द्वात्मकता का चित्र भी उभरकर आया है। संसार के प्रत्येक पदार्थ में दो विरोधीतत्व अनिवार्यतः रहते हैं। अतः एक तत्व के अभाव में दूसरा महत्वहीन होता है। कवि का विश्वास है कि यदि मानवीय जीवन में अवरोध या समस्यायें न हों तो उसका जीवन निरर्थक और उसकी प्रगतिशीलता पर सन्देह होने लगता है। वह जीवन में द्वन्द्व के महत्व को रेखांकित करता हुआ लिखता है–

अगर विरोधाभाव रहे तो जीवन कैसा
एक डाल के फूल एक से कहाँ खिले हैं।[28]

त्रिलोचन को किसान, मजदूर और निम्न वर्ग की पीड़ा तथा व्यक्ति जीवन संघर्ष ने उन्हें अपनी प्रकृति तथा धरती से जुड़ने को प्रेरित किया है। त्रिलोचन जी की कविता में भाषा, शैली, बिम्ब, प्रतीक,

अलंकार तथा छन्द सभी उनकी संवेदना से निर्मित भाव भूमि से जुड़कर प्रस्तुत हुए हैं। उनमें लेशमात्र भी कृत्रिमता या काल्पनिकता नहीं प्रतीत होती। कवि यथार्थ की भूमि पर खड़े होकर वास्तविक परिस्थितियों तथा अनुभूतियों का चित्रण करता है। त्रिलोचन ने आधुनिक कवियों में अपनी अलग पहचान बनाई है। उनकी कविता आधुनिक कविता के प्रचलित प्रतिमानों से अलग आलोचक से एक नये प्रकार के मुक्त और सीधे संबंध की माँग करती है। इस संबंध में केदारनाथ सिंह लिखते हैं- ''असल में त्रिलोचन की कविता... प्रचलित समकालीन कविता के समानान्तर एक प्रतिकविता की हैसियत रखती है और इसीलिए इस बात की माँग करती है कि उसका मूल्यांकन करते समय आधुनिक कविता के प्रचलित मान-मूल्यों को लागू करने की जल्दी न की जाए। ये कविताएँ पाठक से और उससे भी ज्यादा आलोचक से एक नये प्रकार के मुक्त और सीधे सम्बन्ध की अपेक्षा रखती है।''[29] यही कारण है कि त्रिलोचन का व्यक्तित्व हिन्दी काव्य नभोमण्डल में प्रभायुक्त होकर ऊर्ध्वाधर चमक रहा है। लोक जीवन की ऐसी स्वच्छ और जीवन्त तस्वीर हिन्दी जगत में प्रायः दुर्लभ है। इस संबंध में शमशेर का कहना है- ''मगर हैरानी की बात यह कि उद्धरण योग्य ज्ञान मर्म और अनुभूति से भरी सहज ही जितनी पंक्तियाँ अकेले त्रिलोचन के यहाँ से संकलित की जा सकती है, उतनी खड़ी बोली के किसी और दूसरे हिन्दी कवि के यहाँ से नहीं की जा सकती। ऐसा एक संकलन सहज ही दो सौ तीन सौ पृष्ठों का हो जायेगा।''[30]

'धरती के कवि' त्रिलोचन की कविता सभी आवश्यक तत्वों को समाहित कर सहज, स्वाभाविक रूप से लोक जीवन के दृढ़ अवलम्ब को प्रकट करती है। त्रिलोचन अपने जीवन दर्शन को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं-

मुझमें जीवन की लय जागी
मैं धरती का हूँ अनुरागी
जड़ी भूत करती थी मुझको
वह सम्पूर्ण निराशा त्यागी।[31]

अन्ततः कहा जा सकता है कि प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से जैसी दुनिया रची है त्रिलोचन ने वही काम अपनी कविता के माध्यम से वही काम किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सं. नेमिचन्द जैन, मुक्तिबोध रचनावली, भाग-5, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980, पृ. 375
2. त्रिलोचन - गुलाब और बुलबुल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1956, पृ. 41
3. त्रिलोचन - धरती, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण-1977, पृ. 27
4. त्रिलोचन - दिगन्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1957, पृ. 15
5. त्रिलोचन - मैं उस जनपद का कवि हूँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981, पृ. 97
6. त्रिलोचन - धरती, पृ. 25
7. त्रिलोचन - अनकहनी भी कुछ कहनी है, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985, पृ. 87
8. त्रिलोचन - धरती, पृ. 59
9. वही, पृ. 59
10. त्रिलोचन के बारे में मुक्तिबोध का एक लेख, नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र (मुक्तिबोध रचनावली, खण्ड-5), पृ. 34
11. मलयज, कवित के साक्षात्कार, पृ. 65-66
12. मैनेजर पाण्डेय, आलोचना, जुलाई-सितम्बर-1989, पृ. 20
13. त्रिलोचन - धरती, पृ. 50
14. त्रिलोचन, शब्द, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-1980, पृ. 61
15. त्रिलोचन - शब्द, पृ. 18
16. त्रिलोचन दिगन्त, पृ. 17
17. त्रिलोचन, ताप के ताए हुए दिन, सम्भावना प्रकाशन, हापुड़-1981, पृ. 17
18. त्रिलोचन - मैं उस जनपद का कवि हूँ, पृ. 87
19. वही, पृ. 93
20. त्रिलोचन - तुम्हें सौंपता हूँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985, पृ. 83
21. त्रिलोचन - फूल नाम है एक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985, पृ. 71
22. त्रिलोचन - सबका अपना आकाश, राजकमल प्रकाशन, नई दिलली-1985, पृ. 40
23. त्रिलोचन - अनकहनी भी कुछ कहनी है, पृ. 63
24. त्रिलोचन - धरती, पृ. 12
25. त्रिलोचन - गुलाब और बुलबुल, पृ. 38
26. त्रिलोचन - चैती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-1987, पृ. 57
27. डॉ. काँति कुमार - नई कविता, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी-1972, पृ. 128
28. त्रिलोचन - शब्द, पृ. 51
29. केदारनाथ सिंह - दस्तावेज, 13-14 अक्टूबर, 1981, पृ. 140-141
30. शमशेर बहादुर सिंह साक्षात्कार, अगस्त-नवम्बर, 1986, पृ. 59 त्रिलोचन - धरती, पृ. 11